फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान–प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर 313 1/– जुलाई 2014

यहाँ से देखने पर सात अरब की छवि

सब जानते हैं कि आज दुनिया में करीब सात अरब लोग हैं। सब ये भी जानते हैं, महसूस करते हैं, पहचानते हैं कि सात अरब लोग एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं, एक-दूसरे की क्षमताओं को अपनी बातचीत में रखते हैं, और ये क्षमतायें बातचीत में हर समय उभरती रहती हैं। सात अरब मौजूदगियों की निरंतर हलचलें, कंपन, घमक-धमक एक-दूसरे पर प्रभाव डालती हैं। इन प्रभावों की क्वालिटी पृथ्वी पर जीवन के भविष्य में निर्णायक हैं।

हमारा मानना है कि यहाँ, दिल्ली के इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों में, पिछले कुछ वर्षों की गतिविधियाँ, सोच, बातचीत, रिश्ते एक ऐसी धार प्रदान कर रहे हैं जो कि सात अरब की हलचलों को एक गुणात्मक छलाँग दे सकती है। यही कारण है कि हम यहाँ इस क्षेत्र की कुछ उल्लेखनीय बातों की पुनः चर्चा कर रहे हैं।

1. सक्रिय कौन ? प्रतिक्रिया किसकी ?

चौंकाया 2011-2012 में मारुति मानेसर के मजदूरों के कदमों ने। बार-बार फैक्ट्री पर से कम्पनी का कब्जा ढीला किया, कब्जा हटाया। तब हम ने देखना शुरू किया तो मारुति मजदूरों से पहले और मारुति मजदूरों के बाद चारों तरफ मजदूरों को कम्पनियों के कब्जे ढीले करते, कब्जे हटाते पाया। प्रतिक्रिया में कम्पनियों को रियायतें देते पाया। रियायतों को काफी मात्रा में असफल होते देखा। इन असफलताओं ने कम्पनियों के संग-संग सरकार को भी प्रतिक्रिया में दमन करते पाया है। इस क्षेत्र में इन वर्षों में उल्लेखनीय रहा है बड़ी सँख्या में मजदूरों द्वारा फैक्ट्रियों पर आक्रमण करना। ऐसे में प्रतिक्रिया में सरकार ने बड़ी सँख्या में मजदूरों को राजनीतिक कैदी बनाया है। मजदूरों की इन सक्रियताओं की प्रतिक्रिया में न्यायालय राजनीतिक बन्दियों को जमानतें नहीं दे रहे हैं। मजदूरों की सक्रियता पर कुछ नियन्त्रण के लिये प्रतिक्रिया-स्वरूप सरकार ने औद्योगिक क्षेत्रों में सैंकड़ों कमाण्डो और कार्यस्थलों पर पुलिस तैनात कर रखी है। यह मजदूरों की सक्रियता है जो साफ-साफ दिखा रही है कम्पनियों की तथा सरकारों की बढती कमजोरी और लड़खड़ाती सत्ता।

2. निरंतर कब्जे ढीले करती क्रियायें

उल्लेखनी बात यह है कि ठहराव कहीं नजर नहीं आता। हर जगह, हर समय, अनेक प्रकार की हलचलें दिखती हैं। टी-ब्रेक में, लन्च-ब्रेक में, शिफ्ट समाप्ति पर छोटे-बड़े समूहों में बातचीतों में लगातार उठाये जाते कदम चर्चा में रहते हैं। महत्वपूर्ण बात ये है कि भाषा में, चेहरे पर आनंद के भाव होते हैं। गम्भीर-चिन्तित चेहरे मैनेजरों की दुखद नियति बन गये हैं। किसी दिन हजारों महिला मजदूर फैक्ट्री गेट पर पहुँच कर अन्दर ही नहीं जाती। किसी दिन फैक्ट्री के अन्दर हाथ से लिखे पर्चे मैनेजमेन्ट को भयभीत कर देते हैं। किसी दिन दो शिफ्टों के मजदूर फैक्ट्री के अन्दर अचानक एक स्थान पर एकत्र हो कर कम्पनी को हिला देते हैं। कभी फैक्ट्री कैन्टीन में भोजन धरा रह जाता है और मजदूर खाना खाने की बजाय आपस में बातें करते रहते हैं। मोबाइल पर बातचीतें कब क्या कर दें, इससे मैनेजमेन्ट हर वक्त चिन्तित रहती है। महत्वपूर्ण बात ये है कि कदमों में कोई छोटा-बड़ा नहीं होता, और छोटे से छोटा लगने वाला कदम भी बड़े से बड़े पैमाने को अतिशीघ्र प्राप्त कर लेता है।

3. प्रतिनिधित्व से परे

इस दौरान एक बहुत बड़ा परिवर्तन जो देखने में आया है वो है ''मजदूर चाहते क्या हैं ?'' का एक अबूझ पहेली बनना। परम्परागत तौर पर मजदूरों के नाम पर, मजदूरों के हित में, मजदूरों की तरफ से माँग रखना, उस पर समझौता वार्ताओं के लिये प्रतिनिधियों की अनिवार्यता उत्पन्न करना, नियन्त्रण के लिये अनिवार्य आवश्यकता रही है। इधर हम देखते, सुनते, पाते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक समूह अपनी क्षमताओं को लगातार आँकते हैं, सोचते-विचारते हैं। इस ने तीन-वर्षीय दीर्घकालीन समझौतों को सीधे-सीधे नाकारा बना दिया है। ऐसे में मजदूरों में बढती हलचलों के समय डिमाण्ड बना कर उन पर तात्कालिक वार्ता के लिये नुमाइन्दों का उभरना-उभारना भी अतिशीघ्र फेल हो रहा है। इस समझ का व्यापक बनना कि ''मजदूर चाहते क्या हैं ?'' की पहेली पहेली ही बनी रहे, यह मजदूरों की अथाह शक्ति है। और यह अथाह शक्ति बौद्धिक तथा व्यवहारिक के विभाजन को असंगत बना देती है।

4. कब्जे हटाना

मारुति मानेसर के एक साथी के शब्द – ''फैक्ट्री पर से कम्पनी का कब्जा हटाने के समय तीन-चार वर्ष से साथ-साथ काम कर रहे हम ने एक-दूसरे को जैसे पहली बार देखा'' – यह सोच, यह भाव, ये शब्द चारों तरफ गूँज रहे हैं। यही आवेग है जो कार्यस्थल हो, पार्क हो, मैदान हो, कॉलेज हो, को कब्जों से मुक्त करने की प्रेरणा देता है। जीवन के, रिश्तों के नये आधार और नये आयाम कब्जों को ढीले करने के दौरान आकार ग्रहण करने लगते हैं। और अल्प-काल के लिये भी कब्जा हट जाता है तब अनगिनत शब्द आवश्यक हो जाते हैं उस रंगत, उस उमंग को परिभाषित करने के लिये। कुछ शब्द नवजीवन पा लेते हैं, जैसे समझदार, ज्ञानी, बात निभाने वाला, उपाय सुझाने वाली, दीन-दुनिया समझने वाला, अनुभवी, खबर रखने वाली, जानकर, सूफी, संत, वो

(शेष पृष्ठ चार पर)

नाकारा हुआ, लड़खड़ाता कानून का राज

रुपये-पैसे को जीवन की धुरी बनाये रखने के लिये विधान-संविधान हैं। कम्पनियाँ और सरकारें जीवन को रुपये-पैसे से बाँधने-जकड़ने के औजार हैं। नियम-कानून कम्पनियों और सरकारों की सुरक्षा के कवच हैं। आज कानूनों का उल्लंघन सामान्य बन गया है। आज कानूनों का पालन अपवाद बन गया है। यह स्वागत-योग्य स्थिति है। रुपये-पैसे, मण्डी-मुद्रा, ऊँच-नीच का यह अन्तिम चरण है। नई रचना की पूर्व वेला है, सामाजिक मन्थन नित नई तीव्रता और गहराई प्राप्त कर रहा है।

✶14 जून को ओखला औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली में ***ओरियन्ट क्राफ्ट*** मजदूर : " बी-16 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 4-5 दिन पहले 4 वरकरों का कम्पनी ने गेट रोक दिया। सब मजदूरों ने दो दिन काम बन्द किया तब मैनेजमेन्ट ने उन 4 को ड्युटी पर लिया।"

✶इन्डस्ट्रीयल मॉडल टाउन, मानेसर में प्लॉट 203 सैक्टर-4 स्थित ***ऑटोलिव*** फैक्ट्री। ऑटोलिव कम्पनी की 29 देशों में 80 फैक्ट्रियों में 58 हजार मजदूर वाहनों के स्टीयरिंग व्हील, सीट बैल्ट, एयरबैग, सेफ्टी इलेक्ट्रोनिक्स उपकरण बनाते हैं।

मानेसर ऑटोलिव फैक्ट्री में 54 स्थाई मजदूर, 12 ट्रेनी और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे वर्षों से काम करते 130 मजदूर ***मारुति सुजुकी*** कारों के पार्ट्स बनाते थे, कुछ ***महिन्द्रा बोलेरो*** के लिये भी। स्थाई और अस्थाई मजदूरों के बीच बनते-बढते जोड़ों-तालमेलों के दबाव में कम्पनी ने रियायतें दी : सब मजदूरों को वार्षिक वेतन वृद्धि और देरी होने पर एरियर देना, बोनस 20 प्रतिशत, मेन्टेनैन्स के लिये मारुति फैक्ट्रियों में उत्पादन बन्द करते हैं तब ऑटोलिव में सवेतन छुट्टी। रियायतें मजदूरों की हलचलें थाम नहीं पाई। ऐसे में फैक्ट्री पर ढीले होते अपने नियन्त्रण से परेशान कम्पनी दमन की राह पर उतरी है।

मई में ठेकेदारों के जरिये नये मजदूर भर्ती करने शुरू किये। ऑटोलिव की बंगलुरू फैक्ट्री से 40 कुशल मजदूर यहाँ लाये। रविवार, 1 जून को पुराने मजदूरों की साप्ताहिक छुट्टी — फैक्ट्री चली और नई भर्ती जारी। सोमवार को ड्युटी पहुँचे तो पुराने मजदूरों की दो दिन छुट्टी का गेट पर नोटिस। फैक्ट्री में उत्पादन जारी। फिर 4 जून को 17 स्थाई मजदूर नौकरी से बर्खास्त के फैक्ट्री गेट पर चिपके नोटिसों के संग बाकी परमानेट पर गुड कन्डक्ट बॉण्ड भरने की शर्त तथा ठेकेदारों के जरिये रखे पुराने मजदूरों को एक सत्पाह की छुट्टी और दो बस व दो जिप्सी में पुलिस के संग दस बाउन्सर भी फैक्ट्री गेट पर। यूनियन द्वारा श्रम विभाग में शिकायत। तारीखें। गुड़गाँव में 18 जून को प्रदर्शन व डी सी को ज्ञापन। श्रम विभाग में तारीखों के अलावा मैनेजमेन्ट होटल पैराडाइज में 5 प्रतिनिधियों के साथ तीन मीटिंग कर चुकी है। पहली जुलाई को 7-8 यूनियनों के लीडरों ने ऑटोलिव फैक्ट्री पर गेट मीटिंग में भाषण दिये। यूनियन ने श्रम विभाग में 2 जुलाई को फिर ज्ञापन दिया। कम्पनी ने 3 जुलाई को 27 स्थाई मजदूरों को 72 घण्टे में ड्युटी पर पहुँचने के लिये अल्टीमेटम दिया है।

पूरी जून चली भर्ती 1 जुलाई से बन्द है। दस जून तक रिजेक्शन बहुत। फ्रान्स में ऑटोलिव फैक्ट्री से 6 कुशल महिला मजदूर मानेसर लाई गई। पी यू मोल्डिंग जहाँ स्टीयरिंग व्हील बनते हैं वहाँ वे 8 घण्टे मशीनें चलाने के संग सिखाने का काम भी करती। रिजेक्शन पर नियन्त्रण। पाँच 30 जून को फ्रान्स चली गई, एक अब भी यहाँ है। बंगलुरू फैक्ट्री से लाये 40 कुशल मजदूर भी 15 जून बाद आहिस्ता-आहिस्ता वापस भेज दिये, अब 2 बचे हैं जो स्टीयरिंग व्हील का फाइनल इन्सपैक्शन करते हैं। मारुति सुजुकी कम्पनी ने मानेसर फैक्ट्री से 20 मजदूर ऑटोलिव को अपलब्ध करवाये हैं।

ऑटोलिव कम्पनी की अन्य फैक्ट्रियाँ, मारुति कम्पनी, पुलिस, श्रम विभाग, प्रशासन यानी, कम्पनी-पक्ष साफ-साफ दिखता है। मजदूर-पक्ष के आकार ग्रहण करने में बाधाओं को पहचानना और उन्हें दूर करना एक अरजेन्ट आवश्यकता है।

✶फरीदाबाद में प्लॉट 11 सैक्टर-6 स्थित ***ओरियन्ट इलेक्ट्रिक*** फैक्ट्री में पँखे और सी एफ एल बल्ब-ट्युब बनाते 1200 मजदूरों में 50 ही परमानेन्ट वरकर हैं। कैन्टीन में भोजन 50 स्थाई मजदूरों के लिये ही बनता है और जो बच जाता है वही अस्थाई मजदूरों के लिये होता है। चर्चा थी कि फैन प्लान्ट में ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से होने लगा है पर छोटी पेन्ट शॉप, रोटर रूम आदि विभागों में सिंगल रेट से देते हैं। सी एफ एल प्लान्ट में एक भी मजदूर स्थाई नहीं है, सब 400 को ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखा है, सब की 12 घण्टे की शिफ्ट है, सब को ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। फिंगर पँच है पर रिकार्ड में बिना नाम दर्ज किये काम करते महीना हो जाता है, ई.एस.आई. कार्ड तो तीन महीने होने पर भी नहीं देते। परमानेन्ट और कैजुअल वरकरों को ही बोनस देते हैं, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों कोबोनस नहीं देते। ऑटोमैटिक पेन्ट शॉप में मशीनों में खराबी आ जाती है तब भी पेन्ट चढाना जारी रखवाते हैं जिससे 30-40 फुट तक ऐसा बादल बन जाता है कि एक फुट आगे तक नहीं देख सकते। और छोटी पेन्ट शॉप में तो हाथों से पेन्ट गन चलाते हैं, पेन्ट बहुत उड़ता है, दूसरे विभागों तक पहुँच जाता है। पेन्ट करने वालों को मास्क तक नहीं देते। ऑटोमैटिक पेन्टशॉप में 15 जून को दोपहर बाद 3 बजे आग लगी — संयोग था कि तब टी ब्रेक था इसलिये फैक्ट्री में भगदड़ नहीं मची। प्रयोग करने पर कोई फायर अलार्म नहीं बजा। फायर एग्जिट के गेट पर चित्र बना है और लिख भी रखा है कि यह स्थान खाली रखें पर वहाँ कम्पनी ने इस्तेमाल नहीं हो रही मशीनें डाल रखी हैं। ओरियन्ट फैक्ट्री में बन्दे टिकते नहीं, भर्ती चलती रहती है।

✶दिल्ली में ***वजीरपुर औद्योगिक क्षेत्र*** में भी 8 घण्टे की ड्युटी, सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन, साप्ताहिक अवकाश, स्थाई काम के लिये स्थाई मजदूर, ई.एस.आई., पी.एफ., ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से, बीस दिन कार्य पर एक सवेतन छुट्टी, त्यौहारी छुट्टी आदि सम्बन्धी कानूनों का उल्लंघन आम बात है। वजीरपुर में छोटी इकाइयाँ ज्यादा हैं। एक हॉट रोलिंग स्टील मिल में 38-40 मजदूर होते हैं। आज के चलन के अनुसार मजदूरों को कम्पनी के नहीं बल्कि ठेकेदारों के दर्शाया जाता है। इन हालात में हॉट रोलिंग वाली कई फैक्ट्रियों के वरकरों ने क्षेत्र के गरम रोला मजदूरों के तौर पर मिल कर 2012 में काम बन्द किया था। फिर 2013 में 20 से ज्यादा हॉट रोलिंग स्टील मिलें मजदूरों ने कई दिन बन्द की। ***इधर 6 जून से 23-26 गरम रोला कारखानों में मजदूरों ने मिल कर फिर हड़ताल शुरू की।*** दस जून को वजीरपुर औद्योगिक क्षेत्र में प्रदर्शन। श्रम विभाग ने 14 जून को मैनेजमेन्टों और मजदूरों को समझौता वार्ता के लिये बुलाया। बात नहीं बनी। कोल्ड रोलिंग मिल मजदूरों में हलचलें बढी। जन्तर मन्तर पर 26 जून को धरना-प्रदर्शन। उप श्रमायुक्त की उपस्थिति में 27 जून को न्यूनतम वेतन, ई.एस.आई., पी.एफ. आदि कानून लागू करने का लिखित समझौता हुआ। अगले दिन कम्पनियों ने समझौता लागू करने से इनकार कर दिया और फिर उसी दिन उप श्रमायुक्त से लागू करने का वायदा किया। अगले दिन, 29 जून को फिर मुकर गये। उप श्रमायुक्त के कहने पर मजदूरों का रोज कारखानों पर जाना पर ड्युटी नहीं लिया जाना। एक तरफ

(शेष पृष्ठ तीन पर)

आज के सन्दर्भ में बहुत महत्वपूर्ण हैं
तालमेलों की राहें

आज कहीं ऊपर से नहीं टपका है। पिछले 25-30 वर्ष में पक्की नौकरी, अच्छी कम्पनी, बेहद शक्तिशाली कम्पनी जैसे कुछ भ्रम टूटे हैं। एक पीढी में ही भ्रमों के टूट जाने से बेहतर क्या होगा ?

इन 30 वर्षों में फरीदाबाद में फैक्ट्रियों में परमानेन्ट नौकरियाँ फुर्र से उड़ गई, अच्छी कम्पनियों के मजदूरों के हिसाब तक डूब गये, बेहद शक्तिशाली कम्पनियाँ रेत की दीवार की तरह भरभरा कर ढह गई। इस सब के होने के दौरान की मजदूरों की गतिविधियाँ आज के लिये अनेक महत्वपूर्ण सबक लिये हैं। उठाये कदम, कदमों के प्रभाव, उन पर सोच-विचार, कदमों में परिवर्तनों के संग-संग नये कदमों की खोज-रचना-सृजना, बदले-नये कदमों के असर और उन पर मनन-चिन्तन का सिलसिला बहुत तीव्र गति से चला। काफी समय से मजदूरों के बीच जड़ जमाये बैठे बिचौलियों के चिथड़े-चिथड़े कर दिये फरीदाबाद में फैक्ट्री मजदूरों के व्यवहार-विचार-नये व्यवहार-नये विचार की श्रृँखला ने। अपने-अपने झण्डे ले कर अलग-अलग प्रदर्शन करने वाले बिचौलियों के गिरोहों को मजदूरों ने इस कदर नकार दिया कि बिचौलियों के संयुक्त मोर्चे में भी प्रदर्शन करने की क्षमता नहीं रही। ऐसे में फैक्ट्रियों के शहर फरीदाबाद में मई दिवस पर बिचौलियों का संयुक्त मोर्चा सेमिनार-गोष्ठी करने लगा।

फरीदाबाद में फैक्ट्री मजदूरों के इन 25-30 वर्षों के अनुभवों और विचारों को क्रमवार रखने के लिये एक सीरीज की आवश्यकता है। एक सुखद निष्कर्ष से आरम्भ करना सीधे-सीधे हमें 2014 में ले आता है। इसके लिये आइये ***गेडोर हैण्ड टूल्स-झालानी टूल्स*** मजदूरों के तालमेलों के एक परिणाम को देखें।

अमरीका समेत 54 देशों में वाहन फैक्ट्रियों के लिये टूल किट तैयार करती गेडोर कम्पनी का मुख्यालय जर्मनी में था। यहाँ भारत में 7300 परमानेन्ट वरकर गेडोर की 6 फैक्ट्रियों में काम करते थे — तीन फैक्ट्रियाँ फरीदाबाद में, एक कुण्डली (सोनीपत) में, दो महाराष्ट्र में (एक औरंगाबाद में और दूसरी जालना में)। पक्की नौकरी, अच्छी कम्पनी-अच्छी तनखा, शक्तिशाली कम्पनी ने मजदूरों पर नियन्त्रण बनाये रखने के लिये 1973 में बिचौलियों को स्थाई तौर पर स्थापित किया। ऐसे में मैनेजमेन्ट के, कम्पनी के खिलाफ कदम उठाने के लिये यह जरूरी हो गया कि मजदूर पहले यूनियन के खिलाफ जायें। कुछ विस्तार में बातें आगे के अंकों में।

मजदूरों के खिलाफ यूनियन के जरिये भारी हिंसा के बावजूद गेडोर-झालानी टूल्स कम्पनी सन् 2000 आते-आते दिवालिया। कम्पनी की 5 फैक्ट्रियों की 2009 में नीलामी। यूनियन ने फरीदाबाद फैक्ट्रियों के 2295 मजदूरों की 143 करोड़ 32 लाख 65 हजार 286 रुपये 51 पैसे की कम्पनी पर देनदारी बताई। और फिर, कम्पनी को बचाने के लिये, कम्पनी की फरीदाबाद स्थित एक फैक्ट्री को बचाने के लिये यूनियन ने फरीदाबाद के मजदूरों की राशि घटा कर 18 करोड़ रुपये कर उस पर समझौता कर लिया। इसी प्रकार मजदूरों की राशि घटा कर दसवाँ हिस्सा करने वाले समझौते यूनियनों द्वारा ***ईस्ट इण्डिया कॉटन मिल, हितकारी पोट्रीज, मैटल बॉक्स, कमला सिनटैक्स, नोर्दर्न इण्डिया आयरन एण्ड स्टील*** फैक्ट्रियों के मामलों में किये गये। हाँ, गेडोर-झालानी टूल्स मजदूरों ने आपस में तालमेलों का सिलसिला जारी रखते हुये दिल्ली उच्च न्यायालय में दावे भी डाले। प्रत्येक मजदूर का अलग-अलग दावा डालने वाले 300 मजदूरों ने मिल कर यह किया। इधर यूनियन ने हर मजदूर से 5000 रुपये लिये और उन मजदूरों को हाई कोर्ट से समझौते में तय राशि के 44 प्रतिशत के तौर पर 10-20-30 हजार रुपये मिले हैं। जबकि, आरम्भ में 500 रुपये और फिर 100 रुपये के योगदान से 14 वर्ष कानूनी पचड़ों से मिल कर निपटने वाले मजदूरों की 2½ -3 लाख रुपये की राशि दिल्ली उच्च न्यायालय ने मानी है। तालमेलों की राहों पर चले, मिल कर कदम उठाने वाले गेडोर-झालानी टूल्स मजदूरों को 44 प्रतिशत के तौर पर एक लाख रुपये के करीब राशि मिल गई है। बची हुई फैक्ट्री की नीलामी, उन पैसों में से कुछ और पैसे मजदूरों को मिलेंगे। (जारी)

लड़खड़ाता कानून का राज (पृष्ठ दो का शेष)

वरकरों द्वारा कारखानों के घेराव के प्रयास और दूसरी तरफ फैक्ट्रियों के उत्पादन करवाने की कोशिशें। एक फैक्ट्री में काम रोकने के लिये 3 जुलाई को उसका घेराव, कानून और व्यवस्था का हवाला, पुलिस और फुटकर गुण्डों का दखल, करीब एक हजार मजदूर नीमड़ी कॉलोनी स्थित उप श्रमायुक्त कार्यालय पहुँचे, श्रम विभाग ने कम्पनियों को नोटिस भेजा। प्रदर्शन के दौरान 5 जुलाई को पुलिस और फुटकर गुण्डों का फिर दखल, गिरफ्तार करने के प्रयास मजदूरों ने विफल किये — पुलिस गाड़ी के आगे मजदूर लेट गये। उप श्रमायुक्त कार्यालय पर रैली — सोमवार को श्रम विभाग कम्पनियों पर मुकदमा करेगा और 10 जुलाई को फैक्ट्रियों के चालान वहाँ पहुँच जायेंगे की बातें।

✶इन्डस्ट्रीयल मॉडल टाउन मानेसर में प्लॉट 183 सैक्टर-5 स्थित ***बैक्सटर*** दवाई फैक्ट्री के 300 स्थाई मजदूर 27 मई से फैक्ट्री गेट के बाहर किये हुये हैं और फैक्ट्री में उत्पादन कार्य जारी है, इसका विवरण मजदूर समाचार के जून अंक में है। गेट के बाहर बैठे बैक्सटर मजदूरों ने 3 जुलाई को कहा : जून माह में बड़ी यूनियन अपने चुनाव में व्यस्त थी। और, 15 जून से बावल में ***मिण्डा फ्रिकवा*** मैनेजमेन्ट द्वारा 148 मजदूर टरमिनेट कर दिये जाने के बाद वहाँ 200 से ज्यादा वरकर फैक्ट्री के बाहर बैठे हैं। और, 22 से 29 जून होण्डा तथा मारुति सुजुकी में मैन्टेनैन्स शट डाउन के कारण उनकी सहायक कम्पनियों में काम डाउन है। इसलिये बैक्सटर मजदूरों के बारे में जून में कोई खास बात नहीं हुई। समर्थन में फैक्ट्रियाँ बन्द 1 जुलाई के बाद की जायेंगी कहा गया। आज 3 जुलाई को बड़ी यूनियन के गुड़गाँव, आई एम टी मानेसर, बावल, धारूहेड़ा लीडरों की मीटिंग है। नेताओं पर चौतरफा दबाव है, कुछ न कुछ ठोस करना होगा....

✶आई एम टी मानेसर में प्लॉट 399 सैक्टर-8 स्थित ***अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स*** फैक्ट्री में काम करते 600 मजदूरों में 80 प्रतिशत महिला हैं। साठ प्रतिशत से ज्यादा मजदूर तीन ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे गये हैं। तनखा 5500-6000 रुपये, अटपटी शिफ्टें : बी-शिफ्ट साँय 5 से रात 2 बजे की और सी-शिफ्ट रात 2 से सुबह 8 बजे तक, कैन्टीन में भोजन ठीक नहीं। तनखा 8-10 हजार रुपये करवायेंगे कह कर कुछ स्थाई पुरुष मजदूरों ने यूनियन बनाने के लिये फरवरी में सब वरकरों से 1000-1000 रुपये चन्दा लिया। मैनेजमेन्ट ने प्रधान तथा एक बॉडी मेम्बर का गेट रोका। दो दिन बाद, 19 फरवरी को सब मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। सुबह 8 से दोपहर 3 बजे तक काम बन्द रहा, समझौता हुआ, दोनों ड्युटी पर ले लिये और उन्हें बाहर रहे दिनों की तनखा मिलेगी। फरवरी माह की तनखा 7 मार्च को मिली तब हर मजदूर से **(शेष पृष्ठ चार पर)**

यहाँ से देखने पर सात अरब की छवि

(पृष्ठ एक का शेष)

जिसके पास हर बात पे कहानी हो, दूर से खबर लाने वाली, सलाह देने वाला, जिस पे भरोसा किया जा सके, नोलेज रखने वाली, समझने वाला, उल्टा दिमाग रखने वाला, सुनने वाला, खूब पढने वाली, हिम्मत बाँधने वाला, होशियार, जादूगर, काबिल, जिम्मेदार।

5. समय के क्रम के टुकड़े-टुकड़े करना

मन किया तब सोये, मन किया तब जागे, मन किया तब गाने गाये, मन किया तब खाना खाया, मन किया तब बोले, मन किया तब सुना, मन किया तब विश्राम किया, मन किया तब सपने देखे। ना कोई शिफ्ट टाइम, न कोई लन्च टाइम, न कोई टी-ब्रेक, न बस पकड़ने की चिन्ता, न भोजन बनाने की टेन्शन, न दिन-रात का कोई फर्क, न सप्ताह का कौन सा दिन है की चिन्ता, न तारीख की फिक्र। हजारों मजदूरों ने कई कार्यस्थलों पर कब्जा हटा कर ऐसे समय की रचना की है। क्रम-रहित ऐसा समय ही आने वाले समय को इंगित करता है, आने वाले आनंददायक, उल्लासपूर्ण जीवन की दस्तक है।

यहाँ जो दिखाई देता है वो सात अरब लोगों में विभिन्न रूपों में विद्यमान है। हमें लगता है कि यहाँ वो बहुत तीव्रता से और तीखे स्वरूप में उभरा है, उभर रहा है।■

लड़खड़ाता कानून का राज (पृष्ठ तीन का शेष)

यूनियन के लिये 500-500 रुपये लिये। एक महिला कर्मचारी ने इतने चन्दे के बारे में टोका तो हँगामा, उस महिला के खिलाफ एक्शन लो, 4 घण्टे काम बन्द। यूनियन ने अप्रैल में माँग-पत्र दिया। कुछ नहीं हुआ। मई के तीसरे हफ्ते में यूनियन ने स्लो डाउन करवाया — जहाँ 1800-2000 हारनेस बनती थी वहाँ 1000-1200 बनने लगी। कम्पनी ने नये ठेकेदार के जरिये 3 जून से साँय 6 से अगली सुबह 6 की शिफ्ट शुरू की और उसमें 150 नये वरकर रखे — स्लो डाउन की समाप्ति के बाद 9 जून से वे 45 ही हैं और उनकी साँय 5 से अगली सुबह 5 तक की शिफ्ट है। मैनेजिंग डायरेक्टर बोला कि उत्पादन सामान्य करो, एक सप्ताह में, जून के आरम्भ में सब तय हो जायेगा। बड़े यूनियन लीडर भी बोले कि स्लो डाउन बन्द करो, थोड़े समय में समझौता हो जायेगा। दस दिन स्लो डाउन रहा था। जून-आरम्भ में समझौता नहीं हुआ। यूनियन लीडर बोले थे कि 20 जून को समझौता सुना देंगे। लेकिन जून निकल गई है और जुलाई के आरम्भ में भी कुछ नहीं हुआ है।

✶आई एम टी मानेसर में प्लॉट 395-396 सैक्टर-8 स्थित ***सुबरोस ऑटो*** फैक्ट्री में मारुति सुजुकी के लिये एयर कन्डीशनर बनते हैं। सुबरोस के दो मजदूरों से दो-ढाई घण्टे हुई बातचीत के बाद भी बातें हमें समझ में नहीं आई। मार्च-अप्रैल-मई-जून 2014 के दौरान का सुबरोस फैक्ट्री का घटनाक्रम आज के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण लगता है। इस बारे में हम अगले अंक में प्रयास करेंगे।

★ अपने अनुभव व विचार मजदूर समाचार में छपवा कर चर्चाओं को और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दें ।

★ महीने में एक बार छापते हैं, 12,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। चर्चाओं के लिए समय निकालें।

सात अरब में एक

दक्षिण अफ्रीका में जोह्नसबर्ग शहर में फिलानी नामक 23-25 साल के एक युवक ने अपने को बेघर पाने पर लोगों के साथ एक नये रिश्ते का आविष्कार किया। वो कई किताबें जुगाड़ कर सड़क के किनारे बैठता है। हताशा से ग्राहक के इन्तजार में नहीं रहता। हर किताब पढता है, उसकी समीक्षा करता है — सुनने वालों, पूछने वालों, रुकने वालों को किताब का रोचक वर्णन देता है। सड़क से गुजरने वालों के साथ जीवन की एक अलग-सी तरंग उत्पन्न करता है।

सात अरब में दो

25 वर्षीय रेबेका इंग्लैण्ड में रहती है। तरह-तरह की '' कम दाम'' वाली, सेल लगी दुकानों से अपने लिये खरीदारी करती है। रेबेका एक ड्रेस खरीद के जब पहनने लगी तो उसने उस में लेबल के संग कढाई किया एक मैसेज पाया। मैसेज में लिखा था : ''ये बना है जबरन लगवाई फुल नाइट में''। ये पढने पर रेबेका ने बात चारों तरफ फैलाई, पूछताछ की, पता करने की कोशिश कर रही है कि मैसेज भेजने वाले कौन हैं, कहाँ हैं, और उन्हें वो कैसे समझ सकती है।

निमंत्रण

जुलाई में 27 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

Ph. 0129-6567014
E-mail < baatein1@yahoo.co.uk >

भेजिये ! भेजिये ! भेजिये !

जब-तब आप इनमें से कुछ तो करते ही हैं :
कोई वाक्य रचते हैं जो आपको बहुत पसन्द आता है,
दो या चार लाइन की तुकबन्दी करते हैं,
कहानी लिखते हैं,
उपन्यास लिखते हैं,
डायरी लिखते हैं,
सपने दोहराते हैं और लिपिबद्ध करते हैं,
डायलॉग के साथ चित्र बनाते हैं,
कविता रचते हैं,
लेख-निबन्ध लिखते हैं,
पत्र लिखते हैं, पत्र पाते हैं,
गीत-गाने लिखते हैं,
बने-बनाये डायलॉगों की पुनः रचना करते हैं,
पर्चे लिखते हैं, पोस्टर बनाते हैं,
आदि, आदि।

आप से अनुरोध है कि इन्हें हमें भेजें। हम इन्हें पढेंगे और इन्हें छाप कर व्यापक दायरे में लाने के प्रयास करेंगे।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी,
एन आई टी फरीदाबाद —121001

असम में गुवाहाटी से श्री राकेश की ''आम आदमी'', ''परिभाषा दलित की'', ''सच है रोटी'' और '' हम मजदूर'' शीर्षक वाली कवितायें हमें मिली हैं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14